

घ

घटनाक्रियाशास्त्र और एडमण्ड हसर

(Phenomenology and Edmund Husserl)

बीसवीं सदी के युरोपीय दर्शन पर गहरा प्रभाव डालने वाले घटनाक्रियाशास्त्र के अनुसार वस्तुएँ अपना तात्पर्य उन्हें देखने वाले व्यक्ति की चेतना में स्थित बोध के ज़रिये प्राप्त करती हैं। यह बोध इतिहास, संस्कृति और इसी तरह के पूरी तरह से प्रमाणित न किये जा सकने वाले कारकों की देन होता है। घटनाक्रियाशास्त्र के अनुसार अगर इन कारकों को अनुभव से अलग कर दिया जाए तो ज्ञान के धरातल पर एक विशुद्ध आत्मनिष्ठता प्राप्त की जा सकती है। इस दर्शन के संस्थापक जर्मन दार्शनिक एडमण्ड हसर (1859-1938) थे। उनका कहना था कि सभी तरह की चेतना हमेशा साभिप्राय या इरादतन होती है। यानी हम केवल सचेत नहीं होते, बल्कि किसी न किसी वस्तु के प्रति सचेत होते हैं। ज़रूरी नहीं कि उस वस्तु का भौतिक वजूद हो ही। मसलन, अगर किसी को लग रहा है कि उसके सामने एक नखलिस्तान मौजूद है तो वह एक मरीचिका भी हो सकती है। असल में वह नखलिस्तान वास्तव में नज़र के सामने न होने के बावजूद देखने वाले के लिए उसके साथ बनाये गये सार्थक संबंध के कारण आभासित होता है। इसीलिए नखलिस्तान हो या उसकी मरीचिका, वस्तु अपने प्रेक्षक द्वारा उसके प्रति की गयी अपेक्षाएँ पूरी कर पाती है। इससे हसर ने यह निष्कर्ष निकाला कि व्यक्ति का अनुभव वस्तु के साथ कार्य-कारण संबंध का



एडमण्ड हसर (1859-1938)

मोहताज नहीं होता। घटनाक्रियाशास्त्र के विकास ने दर्शन के साथ-साथ समाजशास्त्रीय और कला संबंधी चिंतन को भी काफ़ी प्रभावित किया। हसर के सहायक और महान दार्शनिक मार्टिन हाइडेगर इस अवधारणा को अस्तित्व के तात्पर्य और मानवीय वजूद की संरचना को समझने की दिशा में ले गये। हाइडेगर के अलावा मॉरिस मरली-पोंती, ज्यॉ-पॉल सार्त्र का चिंतन भी घटनाक्रियाशास्त्र से प्रभावित हुआ। इसी आधार पर अल्फ्रेड शुज़ द्वारा फ़िनोमिनोलॉजीकल सोसियोलॉजी का विकास किया गया।

घटनाक्रियाशास्त्र का विकास प्राकृतिक विज्ञानों के आधारभूत सिद्धांतों के साथ संवाद करते हुए हुआ है। हसर की विशेषता यह थी कि वे आलोचनाओं और आत्मालोचना

की रोशनी में अपने चिंतन और रचनाओं की लगातार समीक्षा करते रहते थे, इसलिए वे जीवन भर इस दर्शन को उत्तरोत्तर विकसित करते रहे। कहने के लिए देकार्त और हसर की बौद्धिक परियोजना एक ही थी। दोनों ही ज्ञान के मूलाधारों को अनिश्चितताओं से मुक्त करना चाहते थे। लेकिन हसर की यह विवेचना दर्शनशास्त्र को देकार्त से आगे की मंज़िल की तरफ ले गयी। उनका उद्देश्य अनुभवगत वस्तुओं को देखने का एक अनिवार्य और निश्चित तरीका विकसित करने का था। देकार्त की मान्यता थी कि ईश्वर और स्वयं के अस्तित्व पर शक नहीं किया जा सकता, पर बाक़ी हर चीज़ पर संशय करना तार्किक रूप से सम्भव है। लेकिन हसर किसी विश्वास या आस्था पर संशय करने के बजाय उसकी प्रकृति में निहित असंदिग्ध तत्त्व की शिनाख़्त करने की तरफ़ गये। उन्होंने चेतना की प्रत्येक क्रिया को परखते हुए यह जानने का प्रयास किया कि किसी वस्तु के अनुभव का पूर्व-कल्पित घटक कौन सा है। इस पूर्व-कल्पित हिस्से को बिना उसके सही या ग़लत होने का फ़ैसला किये अगर किनारे रख दिया जाए तो उस अनुभव की सच्चाई पर कोई फ़र्क़ नहीं पड़ेगा। किनारे रखने की क्रिया को हसर ने अपनी भाषा में 'ब्रैकेटिंग' और सही या ग़लत का फ़ैसला न लेने को 'इपाँकी' करार दिया। उन्होंने एक वृक्ष का उदाहरण देते हुए कहा कि अगर किसी वृक्ष के होने से जुड़ी रोज़मर्रा की पूर्व-धारणा को मुलतवी कर दिया जाए तो उससे वृक्ष-संबंधी उस अनुभव में तब्दीली नहीं आयेगी जो चेतना के माध्यम से प्राप्त किया गया है।

देकार्त की थीसिस तो उस जगह रुक जाती है जहाँ वे 'मैं' के होने को असंदिग्ध या ज्ञान का कम से कम एक निश्चित आधार मान लेते हैं। हसर ने किसी के होने के अनुभव को उसमें निहित पूर्व-कल्पनाओं से मुक्त करने की तजवीज़ की। चिंतन के क्षेत्र में यह एक रैडिकल क्रदम था। वस्तु के अनुभव के साथ जुड़ी पहले से बनी समझ के आधार में ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और भौतिक कारक होते हैं जिनकी प्रामाणिकता हमेशा संदेह के दायरे में रहती है। अगर किसी वस्तु या व्यक्ति की सच्ची समझ बनानी है तो उसे ऐतिहासिक शै के तौर पर नहीं समझना चाहिए, क्योंकि उस सूरत में वह समझ पूर्वग्रहों और पूर्व-धारणाओं के फ़िल्टरों से छन कर आयेगी। इस तरह घटनाक्रियाशास्त्र के रूप में एक विशुद्ध और अपरिवर्तनीय आत्मनिष्ठता का निश्चित ज्ञान प्राप्त करने की विधि सामने आयी।

1901 से 1913 के बीच प्रकाशित हसर की दो रचनाएँ *लॉजिकल इनवेस्टिगेशंस* और *आइडियाज़ पर्टेनिंग टू अ प्योर फ़िनामिनाल्लोजी ऐंड फ़िनामिनाल्लोजीकल फ़िलॉसफी* इस दर्शन का प्रमुख ग्रंथ मानी जाती हैं। ज्ञान के इस प्रभावशाली सिद्धांत की प्रमुख समस्या यह थी कि उसे दार्शनिकों का

मोहताज होने की सीमा से कैसे निकाला जाए। रोज़मर्रा के सामुदायिक जीवन और संस्कृति के जगत में ज्ञान-रचना की एक स्वाभाविक प्रवृत्ति के रूप में इसकी स्थापना मुश्किल थी। 1938 में प्रकाशित अपनी अंतिम रचना *क्राइसिस ऑफ़ युरोपियन साइंस ऐंड ट्रांसेडेंटल फ़िनामिनाल्लोजी* में हसर ने इस समस्या का हल खोजने की कोशिश की। उन्होंने प्राकृतिक विज्ञानों के सिद्धांतपरक रवैये की कड़ी आलोचना करते हुए उसे व्यक्तिपरक रवैये के बरक्स रखा। उनका कहना था कि प्राकृतिक विज्ञान कार्य-कारण संबंध और मात्रात्मकता पर इतना जोर देते हैं कि व्यक्ति की भिन्न-भिन्न प्रेरणाओं, आस्थाओं और कामनाओं का उनके लिए कोई महत्त्व ही नहीं रह जाता। चेतना के साभिप्राय होने की थीसिस और विकसित करते हुए उन्होंने कहा कि अलग-अलग रवैयों के आधार पर लोग अपनी-अपनी दुनियाओं की समझ बनाते हैं।

सौंदर्यशास्त्र के क्षेत्र में हसर और घटनाक्रियाशास्त्र का प्रभाव रोमन इनगार्डन के सूत्रीकरणों में देखा जा सकता है। साहित्यिक रचना को एक साभिप्राय वस्तु मान कर इनगार्डन उसकी शिनाख़्त उसके किसी भौतिक तत्त्व के आधार पर करने से इनकार करते हैं। इस विचार के अनुसार साहित्यिक कृति अपनी विविध व्याख्याओं से स्वतंत्र एक टिकाऊ क्रिस्म की अस्मिता से सम्पन्न होती है। कृति की समालोचना करते हुए पाठक उसके सार पर ध्यान देता है और उस प्रक्रिया में कल्पना-आधारित तत्त्वों की सामग्री से वह ठोस निष्कर्ष निकालता है जो लेखक द्वारा अनिर्धारित छोड़ दिया गया है।

घटनाक्रियाशास्त्र के बुनियादी थीसिस से प्रभावित हसर के अनुयायियों ने उनके भाववादी रवैये को स्वीकार नहीं किया। हसर का दर्शन जिस प्रेक्षक के अनुभव पर केंद्रित था उसके कमोबेश अमूर्त अस्तित्व के मुकाबले हाइडेगर और उनके बाद सार्त्र ने अपना चिंतन एक ऐसे प्रेक्षक पर केंद्रित किया जिसका ताल्लुक एक वास्तविक, भौतिक और स्पर्श जगत से था। हसर अनुभव के तात्पर्य को एक अनिवार्य और सार्वभौम सार के रूप में देखते थे, जबकि हाइडेगर ने उस तात्पर्य को ज़िदगी की व्यावहारिक समस्याओं से गुज़रने के दौरान होने वाले अनुभव का नतीजा बताया। हाइडेगर ने कहा कि मनुष्य हथौड़े का जो इस्तेमाल करता है, उसी के मुताबिक उसकी समझ बनाता है। इसलिए घटनाक्रियाशास्त्र के मुताबिक रचे गये विवरण से बनी सार्वभौम समझ के बजाय विभिन्न लक्ष्यों का पीछा करते हुए साधारण इनसान अपने ज्ञान की रचना करता है।

देखें : अस्तित्ववाद, आत्मनिष्ठता-वस्तुनिष्ठता, इयत्ता, इमैनुएल कांट, इंद्रियानुभववाद, ईसैया बर्लिन, उत्तर-आधुनिकतावाद, उदारतावाद, कल्पित समुदाय, चेतना, जॉन लॉक, ज़ाक लकाँ, ज्यॉ-फ़्रांस्वा ल्योतर, ज्यॉ-पॉल सार्त्र, ज़ाक देरिदा, तत्त्वमीमांसा और अस्तित्वमीमांसा,

तात्त्विकतावाद, द्वैतवाद, फ्रेड्रिख नीत्शे-1 और 2, बुद्धिवाद, भौतिकवाद, मनोविश्लेषण, मिशेल पॉल फूको-1 और 2, युरोपीय पुनर्जागरण, युरोपीय ज्ञानोदय, रेने देकार्त, लुई अलथुसे, सोरेन आबी कीर्केगार्ड, संरचनावाद और उत्तर-संरचनावाद, ज्ञानमीमांसा।

संदर्भ

1. डी. वेल्टन (सम्पा.) (1999), *द इसेंशियल हसर : बेसिक राइटिंग्स इन ट्रांसडेंटल फिनॉमिनॉलॉजी*, इण्डियाना युनिवर्सिटी प्रेस, ब्लूमिंगटन.

2. आई. मिलर (1984), *हसर, परसेप्शन, एंड टेम्पोरल एवेयरनेस*, एमआईटी प्रेस, केम्ब्रिज.
3. एच. स्पीलबर्ग (सम्पा.) (1982), *द फिनॉमिनॉलॉजीकल मूवमेंट : अ हिस्टोरिकल इंट्रोडक्शन*, मार्टिनस निजहॉफ, द हेग, 1982
4. आर. बर्नेट, आई. कर्न और ई. मारबैक (1993), *एन इंट्रोडक्शन टू हसरियन फिनॉमिनॉलॉजी*, नॉर्थवेस्टर्न युनिवर्सिटी प्रेस, इवांस्टन, आईएल.

— अभय कुमार दुबे